मौर्य और गुप्तकाल की परराष्ट्र नीति

अमित श्रीवास्तव, शोध छात्र

किसी राज्य की विदेश नीति की सफलता उस राज्य की आर्थिक स्थिति, कूटनीति सम्बन्ध व सांस्कृतिक सम्बन्धों पर निर्भर करता है। प्राचीन काल में लगभग हर महत्वपूर्ण राज्यों के विदेशो से सम्बन्ध रहे हैं। मौर्य व गुप्त वंश जो प्राचीन भारत के एक महत्वपूर्ण वंश थे इनका विदेशों से सम्बन्ध रहना स्वाभाविक था। पहले मौर्यों की बात की जाए तो मौर्यकालीन विदेश नीति की जानकारी हमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र तथा अशोक के अभिलेखों से मिलती है। मण्डल सिद्धान्त के माध्यम से दूसरे राज्यों से सम्बन्ध, शक्ति संतुलन, युद्ध व शान्ति की परिस्थिति, मित्र व शत्रु राज्यों से सम्बन्ध की जानकारी मिलती है। अशोक के अभिलेखों से शासन नीति, सामाजिक आर्थिक स्थिति के साथ विदेश नीति की जानकारी मिलती है। दूसरे शिलालेख से अशोक के लोपोकारी कार्यों के साथ विदेश नीति की भी जानकारी मिलती है।'

अशोक के दूसरे शिलालेख में उल्लेख मिलता है कि देवताओ के प्रिय राजा के साम्राज्य में सब जगह यहाँ तक कि उसके सीमावर्ती राज्यों में भी चोल, पाण्ड्य सत्तिय पुत्त, केरल पुत्त, सिंहल (श्रीलंका), एंटीओकस नामक यवन राज्य सभी स्थानों पर देवताओं के प्रिय राजा ने दो प्रकार की चिकित्सा का प्रबन्ध किया है। इसमें मनुष्यों के लिए चिकित्सा परिचर्या तथा पशुओं के लिए चिकित्सा परिचर्या सम्मिलित है। इस अभिलेख से विदेशी राज्यों से सम्बन्ध ज्ञात होता है:-

इसी प्रकार १३वें शिलालेख में अशोक ने धम्म विजय के महत्व को बताया है। १३वें शिलालेख में कहा गया है कि 'मैं अपने राज्य में तथा सब सीमांन्त देशों में ६०० योजन तक जिनमें अन्तियोक नामक राजा राज्य करता है तथा अन्य चार राजा तुरमय, अन्तिकिन, मग व अलिकसुन्दर तथा दक्षिण की ओर चोल, पाण्ड्य, ताम्रपर्णि तक धर्म विजय प्राप्त की।' अशोक की विदेश नीति शांतिपूर्ण सह-अस्तिव पर आधारित थी जिसकी प्रासंगिकता आज के समय में भी है।

ऐसा लगता है कि जो शिष्ट मण्डल अशोक ने विदेशो में भेजे थे उसे ज्यादा सफलता नहीं मिली क्योकि कहीं भी यूरोपीय स्रोतों से इसकी जानकारी नही मिलती है। मुख्य शिलालेखों में विदेशी राज्यों के जिक्र किये जाने का कारण यह था कि शिष्ट मण्डलों को विदेशों में हाल ही में भेजा था और उसे सफलता पर विश्वास था। सफलता सिर्फ श्रीलंका में मिली जहाँ का राजा तीष्य धम्म विचाराधारा का अनुयायी बन गया।

मौर्यकाल में भारत व ईरान के मध्य पारस्परिक सम्पर्क के प्रचुर साक्ष्य हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि मौर्य कला पर ईरानी प्रभाव दिखाई देता है। ईरान व भारत में कुछ सास्कृतिक समानता भी दिखाई देती है। जैसे ईरान में कुछ अवसरों पर सिर मुण्डवाना दण्ड देने का एक तरीका है। अर्थशास्त्र व महावश में भी इस प्रकार के दण्ड का जिक्र है। अभिलेख लिखवाने की प्रेरणा अशोक ईरानी शासक से ही लिया है। यहाँ तक की लिखने का तरीका भी ईरानी अभिलेख से मिलता है लेकिन ईरानी शासक डेरियस की तुलना में अशोक का फरमान अधिक नम्र था।'

गुप्तों के विदेशी नीति प्रयाग प्रशस्ति से विदेशी राज्यो के बारे में जानकारी मिलती है। समुद्रगुप्त के समय सिंहल (श्रीलंका) का मेधवर्ण था। चीनी स्रोतो से पता चलता है कि मेघवर्ण ने समुद्रगुप्त के दरबार में उपहारों सहित एक दूतमण्डल भेजा था। गुप्त शासक की आज्ञा से उसने सिंहल के बौद्ध भिक्षुओं के लिए भव्य बिहार बनवाया था। अभिलेखों में 'आदि सर्वद्वीप वासीभिः नाम मिलता है। इसका संकेत दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से है। यहाँ के शासक इस समय अपनी मातृभूमि देश भारत से सम्बन्ध बनाए हुए थे। जावा से प्राप्त एक ग्रन्थ में ऐश्वर्य पाल नामक राजा का उल्लेख हुआ है। जो अपने को समुद्रगुप्त का वंशज बताता है। चीन और रोम में गुप्त काल में जो दूत गये थे वे वास्तव में आज के सद्भावना मण्डल की भांति थे। उनका कार्य नरेशों को उपहार भेट करना और उनसे व्यापार की सुविधाएं प्राप्त करना था।

सामन्तों से सम्बन्ध: मौर्य राज्य केन्द्रीयकृत राज्य था इसलिए इस राज्य में सामन्त राजा नहीं थे। 'गुप्तों' के समय विकेन्द्रीयकरण सामन्ती राज्य विद्यमान थे, सामन्ती सम्बन्धों का विकास समुद्रगुप्त के समय अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया। समुद्रगुप्त ने विभिन्न राजाओं और सरदारों से अधीनता स्वीकार करवाकर उन्हें अपने पदों पर छोड़ दिया। परिमाणस्वरूप सामन्तों की संख्या में वृद्धि हुयी। अपने-अपने

सिंहासनो पर पुनः प्रतिष्ठित कर दिये जाने के बदले अधिनस्थ राजाओं से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे सभी कर प्रदान करें, राज्यादेशों का पालन करें, राज परिवार में अपनी कन्याओं का विवाह कर श्रद्धा भक्ति प्रकट करें, जरूरत पड़ने पर सैनिक सहायता करें।' उल्लेखनीय है कि समुद्रगुप्त द्वारा विभिन्न नरेशों और सरदारों के लिए सामन्त शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र 'अशोक के अभिलेख' में इस शब्द का अर्थ स्वतंत्र पड़ोसी है। सामन्तों के दरबार में सम्राट के हितो की रक्षा के लिए तथा सामान्तों पर नियंत्रण के लिए सम्राट की ओर से प्रतिनिधि रहा करते थे। कर देना, अपनी पुत्रियों की राज परिवार में शादी करना, आज्ञा पालन करना, सामन्तो के लिए जरूरी था, इसी के बदले उन्हें उनका राज्य वापस मिलता था। गुप्त शासन में उन शर्तो का उल्लेख किया जाता था जिस शर्त पर राज्य वापस किया जाता था।

***

सन्दर्भ :-

१. द्वितीय शिलालेख, (रोमिला थापर की पुस्तक, अशोक एवं मौर्य साम्राज्य का पतन) पृ. २५८
२.१३वां शिलालेख
३. वहीं
४ थापर, रोमिला, उपरोक्त पुस्तक, पृ. ११९.
५. अर्थशास्त्र ४/९, महावश ६१४२
६. थापर, रोमिला, उपरोक्त पुस्तक, पृ. १२०.
७. प्रयाग प्रशस्ति २३.२४ पक्ति
८ वही
९. तंत्रिका मन्दक
१०. तंत्रिका प्रशस्ति एल-१/२२/२४
११. शर्मा, आर.एस. प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार, पृ.३२६
१२. वही
१३. अर्थशास्त्र, कौटिल्य १/६
१४.. शर्मा, आर एस उपरोक्त पुस्तक
१५. वही

***

अंतिम यात्रा

प्रवीण कुमार यादव
समाजशास्त्र विभाग
(एम.ए. द्वितीय वर्ष)

था म नींद म मुझे इतना सजाया जा रहा था,
बड़े ही ार से मुझे नहलाया जा रहा था
था पास मेरे हर कोई अपना उस वक्त फिर भी म,
जो कभी देखते भी ना थे मोहब्बत की निगाहों से
उनके दिल से भी ार मुझ पर लुटाया जा रहा था
मालूम नहीं हैरान था हर कोई मुझे सोते देखकर
जोर-जोर से रोकर मुझे जगाया जाए था
न जाने था वह कौन सा अजीब खेल मेरे घर म
बों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था
कांप उठी मेरी रूह को मंजर देखकर,
जहां मुझे हमेशा के लिए सुलझा जा रहा था
इस दुनिया म कोई किसी का हमदद नहीं होता
लाश को श्मशान म रखकर अपने ही
लोग पूछते हैं और कितना वक्त लगेगा
मोहब्बत की इ हान थी जिन दलों म मेरे लिए ार
उन दिनों के हाथों आज म जलाया जा रहा था
जलाया जा रहा था

दिन में तहरी और रात में मैगी
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते हैं
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं
अनजान शहर म छोटा सा रूम लेकर
किचन बेडरूम सब उसी में सहेज कर
चाहत में तेरी अपने मां-बाप और दोनों से दूर रहते हैं
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं
राशन की गठरी सिर पर उठाए
अपनी मायूसी और मजबू रयां खुद ही छुपाए
खचाखच भरे टेन में बिना टिकट के रस्क लेके सफर करते हैं,
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं
इंटरनेट अखबारों म तुमको तलाशते,
तेरे लिए पत्र-पित्रकाएं पढ़ते,पढ़ते
३२ साल तक के जवान कुं वारे फिरते हैं
तू कितनी हसीन है यह नौकरी,
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं